3.अलसकथा

अयं पाठः विद्यापतिकृतस्य कथाग्रन्थस्य पुरूषपरीक्षेतिनामकस्य अंशविशेषो वर्तते । पुरुषपरीक्षा सरलसंस्कृतभाषायां कथारूपेण विभिन्नानां मानवगुणानां महत्वम् वर्णयति, दोषाणां च निराकरणाय शिक्षां ददाति । विद्यापतिः लोकप्रियः मैथिलीकविः आसीत् । अपि च बहूनां संस्कृतग्रन्थानां निर्मातापि विद्यापतिरासीत् इति तस्य विशिष्टता संस्कृतविषयेऽपि प्रभूता अस्ति । प्रस्तुते पाठे आलस्यनामकस्य दोषस्य निरूपणे व्यंग्यात्मिका कथा प्रस्तुता विद्यते । नीतिकाराः आलस्यं रिपुरूपं मन्यन्ते ।

यह पाठ विद्यापति जी द्वारा रचित पुरुष परीक्षा नमक कथा ग्रंथ का विशेष अंश हैं। पुरुष परीक्षा सरल संस्कृत भाषा में कथा के रूप से विभिन्न मानवीय गुणों के महत्व का वर्णन करती है। और दोषों को निराकरण या दूर करने के लिए शिक्षा देती है। विद्यापति लोकप्रिय मैथिली कवि थे। और भी बहुत संस्कृत ग्रन्थों का निर्माता भी विद्यापति थे, ऐसी उसकी विशिष्टता संस्कृत विषय में भी बहुत हैं। प्रस्तुत पाठ में आलस्य नामक दोष के निरूपण में व्यंग्य स्वरूप कथा प्रस्तुत हैं। नीतिकार लोग अलसी को दुश्मन के स्वरूप मानते हैं।

आसीत् मिथिलायां वीरेश्वरो नाम मन्त्री । स च स्वभावाद् दानशीलः कारूणिकश्च सर्वेभ्योदुर्गतभ्योऽनाथेभ्यश्च प्रत्यहमिच्छाभोजनं दापयति तन्मध्येऽलसेभ्योऽप्यन्नवस्त्रे दापयति । यतः –

मिथिला में वीरेश्वर नामक मंत्री थे। और वे स्वभाव से दानशील और दयावान थे। सभी संकटग्रस्तों और अनाथों को प्रतिदिन इच्छानुसार भोजन दिलाते थे । क्योंकि -

निर्गतीनां च सर्वेषामलसः प्रथमो मतः । किञ्चिन्न क्षमते कर्तुं जाठरेणाऽपि वह्निना ।।

संकटग्रस्तों में आलसियों का प्रथम स्थान हैं। क्योंकि वे पेट की भूख रूपी ज्वाला से तप्त होकर भी कुछ नहीं करना चाहते हैं।

ततोऽलसपुरूषाणां तत्रेष्टलाभं श्रुत्वा बहवस्तुन्दपरिमृजास्तत्र वर्तुलीबभूवुः यतः –

इसके बाद आलसी पुरुषों के वहां इच्छित लाभ को सुनकर बहुत से तोंद बड़े हुए लोग जमा हो गये। क्योंकि -

स्थितिः सौकर्यमूला हि सर्वेषामपि संहते । सजातीनां सुखं दृष्ट्वा के न धावन्ति जन्तवः ।।

अपने अनुकूल स्थिति सभी जीव चाहते हैं। अपने जाति के सुख को देखकर कौन जंतु उस ओर नहीं दौड़ते हैं? अर्थात् सभी उस ओर दौड़ते हैं।

पश्चादलसानां सुखं दृष्ट्वा धूर्ता अपि कृत्रिममालस्यं दर्शयित्वा भोज्यं गृह्णन्ति । तदनन्तरमलसशालायां बहुद्रव्यव्ययं दृष्ट्वा तन्नियोगिपुरूषैः परामृष्टम् यदक्षमबुद्ध्या करूणया केवलमलसेभ्यः स्वामी वस्तूनि दापयति, कपटेनाऽनलसा अपि गृह्णन्ति इत्यस्माकं प्रमादः । यदि भवति तदालसपुरूषाणां परीक्षां कुर्मः इति परामृश्य प्रसुप्तेषु अलसशालायां तन्नियोगिपुरूषाः वह्नि दापयित्वा निरूपयामासुः ।

इसके पश्चात आलसियों के सुख को देखकर कपटी भी बनावटी अलस्य दिखाकर भोजन ग्रहण करने लगा। इसके बाद आलसियों के घर बहुत धन के खर्च को देखकर उन राजपुरुषों ने विचार किया यदि अक्षम (थोड़ा) बुद्धि अथवा दया से स्वामी केवल आलसियों को वस्तुएं देते हैं और कपट से अनआलसी भी ग्रहण कर रहें हैं यह हमारी अलस्य है। यदि होता है तब आलसी पुरुषों का परीक्षा करनी चाहिए । ऐसा विचार कर सोए हुए आलसियों के घर में उन राजपुरुषों ने आग लगाकर हल्ला कर दिया।

ततो गृहलग्नं प्रवृद्धमग्निं दृष्ट्वा धूर्ताः सर्वे पलायिताः । पश्चादीषदलसा अपि पलायिताः । चत्वारः पुरुषास्तत्रैव सुप्ताः परस्परमालपन्ति । एकेन वस्त्रावृतमुखेनोक्तम् - अहो कथमयं कोलाहलः ? द्वितीयेनोक्तम् तर्व्यते यदस्मिन् गृहे अग्निर्लग्नोऽस्ति । तृतीयेनोक्तम् कोऽपि तथा धार्मिको नास्ति य इदानीं जलाद्रैर्वासोभिः कटैर्वास्मान् प्रावृणोति ? चतुर्थेनोक्तम् अये वाचालः। कति वचनानि वक्तुं शक्नुथ ? तूष्णीं कथं न तिष्ठथ ?

- इसके बाद घर में लगी बढ़ती या फैलती हुई आग को देखकर सभी कपटी भाग गए। इसके पश्चात थोड़ी आलसी भी भाग गए। चार पुरुष वही सोये हुए आपस में बातचीत करते हैं। एक द्वारा वस्त्र से ढँके मुख से बोला गया अरे! यह कैसी हल्ला ? दूसरे द्वारा बोला गया लगता है, कि इस घर में आग लगी है। तीसरे द्वारा बोला गया कोई भी ऐसा धार्मिक नहीं है, जो इस समय हमें जल से भींगे हुई चटाई से ढँक दें। तब चौथे द्वारा कहा गया अरे! वाचालों कितना बोलने में सकते हो ? चुपचाप क्यों नहीं रहते हो ।

ततश्चतुर्णामपि तेषामेवं परस्परालापं श्रुत्वा वह्नि च प्रवृद्धमेषामुपरि पतिष्यन्तं दृष्ट्वा नियोगिपुरूषैर्वधभयेन चत्वारोऽप्यलसाः केशेष्वावाकृष्य गृहीत्वा गृहाद् बहिःकृताः । पश्चात्तानालोक्य तैर्नियोगिभिः पठितम् -पतिरेव गतिः स्त्रीणां बालानां जननी गतिः । नालसानां गतिः काचिल्लोके कारूणिकं बिना ।। पश्चात्तेषु चतुर्व्वलसेषु ततोऽप्यधिकतरं वस्तु मन्त्री दापयामास ।।

इसके पश्चात् उन चारों में वैसे ही परस्पर बातचीत को सुनकर और बढ़ती हुई अग्नि को उसके ऊपर गिरते हुए देखकर उन राजपुरुषों ने वध के भय से चारों आलसियों को बाल पकड़कर खींचते हुए घर से बाहर किया। इसके पश्चात् उनको देखकर उन राजपुरुषों द्वारा पढ़ा गया - स्त्रियों की गति पति से और बालकों की गति माता से होती है। परंतु आलसियों के दयावानों के बिना संसार में कोई गति नहीं है। इसके बाद उन चारों को मंत्री द्वारा अधिक से अधिक धन दिया गया।

1. 'अलसकथा' पाठ में किसका वर्णन है ?

उत्तर - मैथिल कवि विद्यापति ने 'पुरुष परीक्षा' नामक ग्रंथ लिखा है जिससे उद्धृत 'अलस कथा' में आलस्य के निवारण की प्रेरणा और इस संसार की लोक नीतियों और अनेक पक्षों पर व्यंग्यात्मक दृष्टि डाली गयी है। इस पाठ में मुख्य रूप से मिथिला के मंत्री वीरेश्वर और चार आलसियों का वर्णन किया गया है।

2. चारों आलसी पुरुष आग से किस प्रकार बचना चाहते थे ?

उत्तर - चारों आलसी पुरुष आग लगने पर भी घर से नहीं भागे। शोरगुल सुनकर वे जान गए थे कि घर में आग लगी हुई है। वे चाहते थे कि कोई धार्मिक एवं दयालु व्यक्ति आकर आग पर जल, वस्त्र या कंबल डाल दे, जिससे आग बुझ जाए और वे लोग बच जाएँ।

3. "अलसकथा' का क्या संदेश है ?

उत्तर - अलसकथा का संदेश है कि आलस्य एक महान् रोग है। आलसी का सहायक प्रायः कोई भी नहीं होता। जीवन में विकास के लिए व्यक्ति का कर्मठ होना अत्यावश्यक है। आलस्य शरीर में रहनेवाला महान् शत्रु है जिससे अपना, परिवार का और समाज का विनाश अवश्य ही होता है। यदि जीवन में विकास की इच्छा. रखते हैं तब आलस्य त्यागकर उद्यम को प्रेरित हों।

4. आलसशाला के कर्मियों ने आलसियों को आग से कैसे और क्यों निकाला ?

उत्तर - जब चार आलसी परुष आग लगने पर भी घर से नहीं भागे तब एक योगी पुरुष ने आकर उनके केशों को पकड़कर उन्हें ढकेलते हुए बाहर किया। क्योकिं उन्हें वास्तविक आलसियों की पहचान हो चुकी थी। एवं उनके प्राण का दायित्व भी उन्ही के ऊपर था। इस प्रकार आलसी पुरुष आग से बचे।

5. किनकी क्या-क्या गतियाँ हैं ? पठित पाठ के आधार पर स्पष्ट करें।

उत्तर - गति को यहाँ विशेष रूप से विश्लेषित किया गया है। स्त्री, पुरुष एवं बच्चों की गतियाँ अलग-अलग हैं। स्त्रियों की गति पति हैं, बच्चों की गति माँ है तथा आलसियों की गति कारुणिकता (दयालुता) है। अर्थात् स्त्रियों की जीवनभंगिमा उसके पति पर निर्भर करती है। बच्चों की जीवनवृत्ति उसकी माँ ही होती है। आलसियों की जीवनवृत्ति दयालुओं पर ही निर्भर होती है।

6. अलसकथा पाठ का पाँच वाक्यों में परिचय दें।

उत्तर - यह पाठ विद्यापति द्वारा रचित पुरुषपरीक्षा नामक कथाग्रन्थ से संकलित एक उपदेशात्मक लघु कथा है। विद्यापति ने मैथिली, अवहट्ट तथा संस्कृत तीनों भाषाओं में ग्रन्थ-रचना की थी। पुरुषपरीक्षा में धर्म, अर्थ, काम इत्यादि विषयों से सम्बद्ध अनेक मनोरंजक कथाएँ दी गयी हैं। अलसकथा में आलस्य के निवारण की प्रेरणा दी गयी है। इस पाठ से संसार की विचित्र गतिविधि का भी परिचय मिलता है।

7. "अलसकथा' पाठ के लेखक कौन है तथा इससे क्या शिक्षा मिलती है ?

उत्तर - मैथिली कवि विद्यापति रचित "अलसकथा" में आलसियों के माध्यम से शिक्षा दी गयी है कि उनका भरण-पोषण करुणाशीलों के बिना संभव नहीं है। आलसी काम नहीं करते, ऐसी स्थिति में कोई दयावान् ही उनकी व्यवस्था कर सकता है। अतएव आत्मनिर्भर न होकर दूसरे पर वे निर्भर हो जाते हैं।

8. 'अलसकथा' पाठ में वास्तविक आलसियों की पहचान कैसे हुई?

उत्तर - जब अलसशाला में भोजन वस्त्रादि पाने वाले लोगों में धूर्तों और कम आलसी लोगों की भी संख्या बढ़ने लगी तो व्यय अधिक होने लगा। तब मंत्री वीरेश्वर के अधिकारियों ने सच्चे आलसी का

पता लगाने के लिए अलसशाला में आग लगवा दिया जिससे धूर्त और कम आलसी लोग भाग गए और जो वास्तविक में जो चार आलसी थे सिर्फ वहीं बचे रहे।

9. अलसशाला में आग लगने पर क्या हुआ ?

उत्तर - सही आलसी का पता लगाने के लिए जब मंत्री वीरेश्वर के नियोगी पुरुषों ने अलसशाला में आग लगा दी तो सबसे पहले कम आलसी लोग अपनी जान बचाकर भागे । तत्पश्चात् धूर्तों ने भी वहाँ से भागने में ही अपनी भलाई सोची और केवल चार आलसी ही बचे जो वास्तविक आलसी थे।

10. अलसशाला के कर्मियों ने आलसियों की परीक्षा क्यों ली ?

उत्तर - आलसियों की गरीब अवस्था को देखकर मिथिला के मंत्री वीरेश्वर ने अलसशाला का निर्माण करवा दिया जहाँ वे आलसियों को भोजन और वस्त्र देते थे। सहज सुलभ भोजन और वस्त्र को देखकर धूर्त और कम आलसी लोग भी वहाँ जाकर भोजनादि प्राप्त करने लगे। इस स्थिति में अधिक व्यय होने लगा। तब अलसशाला के कर्मियों ने वास्तविक आलसी कौन है इसकी परीक्षा हेतु अलसशाला में आग लगवा दिया।

11. विद्यापति कौन थे? उन्होंने किस ग्रंथ की रचना की तथा 'अलस कथा' में किसकी कहानी है? छः वाक्यों में लिखें।

उत्तर - विद्यापति बिहार के मिथिला प्रदेश के एक सुविख्यात है। मैथिली भाषा के अतिरिक्त संस्कृत भाषा पर भी उनका अधिकार है तथा उन्होंने 'पुरुषपरीक्षा' नामक एक कथाग्रंथ लिखा है जिसका एक अंश विशेष 'अलसकथा' शीर्षक पाठ से पाठ्य पुस्तक में संकलित है। 'अलसकथा' पाठ में चार आलसियों की कथा वर्णित है जिनके भरण पोषण के लिए मंत्री वीरेश्वर ने अलसशाला का निर्माण करवाया। जहाँ कुछ धूर्त और कम आलसी भी भोजन वस्त्र प्राप्त करने लगे जिससे आवश्यकता से अधिक व्यय होने लगा। तब सच्चे आलसी का पता लगाने के लिए अलसशाला में आग लगा कर सच्चे आलसियों का पता लगाया गया।

12. मंत्री वीरेश्वर की विशेषताओं का वर्णन करें।

उत्तर - मंत्री वीरेश्वर स्वभाव से दयालु और दानशील थे। वह अनाथों और निर्धनों को उनकी इच्छा के अनुसार भोजन तथा वस्त्र देते थे। उन्होंने आलसियों को भोजन तथा वस्त्र देने के लिए अलसशाला का निर्माण करवाया था।

13. 'अलसकथा' का सारांश लिखें ।

उत्तर -'अलसकथा' विद्यापति रचित 'पुरुष परीक्षा' कथासंग्रह से संकलित है मिथिला में वीरेश्वर नाम का एक मंत्री था। वह स्वभाव से दानी एवंदयावान् था। वह संकटग्रस्तों, निर्धनों तथा अनाथों को इच्छाभर भोजन, वस्त्र दिया करता था । उसका मानना था कि आलसी के लिए हर कष्ट सहज होता है किन्तु परिश्रम असहज तब आलसी लोगों का इच्छानुकूल लाभ सुनकर कुछ लोग सुख प्राप्त करने की इच्छा से कृत्रिम आलसी के रूप में मुफ्त भोजन ग्रहण करने लगे। इसके बाद आलसियों पर अधिक खर्च होते जानकर किसी ने सलाह दी कि सिर्फ आलसी के लिए अन्न-वस्त्र देने की व्यवस्था है, लेकिन कुछ धूर्त भी आलसी होने का स्वांग रचकर लाभान्वित हो रहे हैं। इसलिए इन आलसियों के आलस्य की परीक्षा ली जाए। ऐसा विचार करके आलसियों के घर में आग लगा दी गई। घर में आग लगी देखकर सभी धूर्त भाग गए, लेकिन चारों आलसी कपड़ों से मुँह ढके सोए रहे। अगलगी के कारण लोग शोर-गुल मचाने लगे

14. चारों आलसियों का सम्वाद अपने शब्दों में लिखें।

उत्तर - जब रात्रि काल में नियोगी पुरुषों द्वारा अलसशाला में आग लगा दी गयी तो जो वास्तविक आलसी थे वे वहीं उसी अवस्था में पड़े रहे और आपस में बात करते रहे। पहला बोला कि ये कैसा कोलाहल हो रहा है तो दूसरा आलसी बोला कि लगता है कि अलसशाला में आग लग गयी है। तो तीसरा आलसी बोला कि कोई भी धार्मिक पुरुष नहीं बचा जो हमलोगों पर कोई भींगा कपड़ा डाल दे। इस पर चौथे आलसी ने कहा कि तुमलोग इतनी बातचीत क्यों कर रहे हो चुपचाप पड़े रहो।

15. 'अलसकथा' पाठ के आधार पर लेखक के विचार स्पष्ट करें।

उत्तर - 'अलसकथा' पाठ में लेखक विद्यापति ने अपने विचार को स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि आलसी व्यक्ति बिना परिश्रम किए हुए जीवन व्यतीत करना चाहता है। कारूणिक व्यक्ति के बिना वह अपने को मौत से भी नहीं बचा पाता है। आलस्य शत्र के समान है।

16. अलसकथा का वर्णय विषय क्या है ?

उत्तर - विद्यापति द्वारा रचित कथाग्रंथ 'पुरुष परीक्षा' नामक पुस्तक से लिया गया 'अलसकथा' मानव महत्व एवं दोषों के निराकरण की शिक्षा देता है। आलसियों को दान देने की इच्छा रखनेवाले बीरेश्वर ने यह जानने की उत्कंठा प्रकट की थी कि आलसी जीवन जीने की कला का कैसे निर्वहन

करते हैं। इष्ट लाभ के लिए मेहनती भी आलसी का रूप लेकर पहुँचने लगते हैं। उनकी परीक्षा के लिए दानगृह में आग लगा दी जाती है। आलसी भागने के बजाय गीले कपड़े से ढकने, घर में आग लगी है, यहाँ कोई धार्मिक नहीं है आदि की चर्चा करते हैं। आलसी केवल करूणा के पात्र होते हैं।

IMPORTANT OBJECTIVE QUESTION

1.' पुरुष परीक्षा' ग्रंथ में किसके गुणों का वर्णन है ?

(A) दानव

(B) मानव

(C) देवता

(D) पशु

Ans : B

2. मैथिली भाषा के कवि कौन थे ?

(A) प्रेमचंद

(B) दिनकर

(C) मैथलीशरण गुप्त

(D) विद्यापति

Ans : D

3. कौन परीश्रम नहीं करना चाहता है ?

(A) परीश्रमी

(B) मूर्ख

(C) विद्वान्

(D) आलसी

Ans : D

4. भूखा रहना कौन पसंद करता है ?

(A) परीश्रमी

(B) आलसी

(C) मूर्ख

(D) विद्वान

Ans : B

5. पतिरेव गतिः..... कारुणिकं बिना | किस पाठ से लिया गया है ?

(A) संस्कारा

(B) मंगलम

(C) शास्त्रकारा

(D) अलसकथा

Ans : D

6. स्त्रियों का रक्षक कौन होता है ?

(A) पुत्र

(B) पति

(C) माता

(D) पिता

Ans : B

7. चारो आलसियों को क्या पकड़कर बाहर निकाल दिया ?

(A) हाथ

(B) पैर

(C) केश

(D) कान

Ans : C

8. आलसियों का रक्षक कौन होता है ?

(A) बलवान

(B) दयावान

(C) पिता

(D) पुत्र

Ans : B

9. चारों आलसियों को कैसे बाहर किया गया ?

(A) पैर पकड़कर

(B) हाथ पकड़कर

(C) केश पकड़कर

(D) बाँह पकड़कर

Ans : C

10. आलसियों के घर में आग कौन लगवाता है ?

(A) राजा

(B) मंत्री

(C) शत्रु

(D) योगिपुरुष

Ans : D

11. अलसकथान्तर्गत मिथिला में कौन मंत्री थे ?

(A) तपेश्वर

(B) भुवनेश्वर

(C) वीरेश्वर

(D) महेश्वर

Ans : C

12. अलसकथा पाठ कहाँ से लिया गया है ?

(A) पुरुषपरीक्षा

(B) नीतिश्लोक

(C) भारतमहिमा

(D) व्याघ्रपथिक कथा

Ans : A

13 . अलसकथा' पाठ किस प्रकार की कथा है?

(A) पद्यात्मक

(B) व्यंग्यात्मक

(C) रसात्मक

(D) कथात्मक

Ans : B

14. अलसशाला में आग क्यों लगाई गई ?

(A) आलसियों को भगाने के लिए

(B) आलसियों की परीक्षा करने के लिए

(C) अलसशाला की सम्पत्ति को हड़पने के लिए

(D) इनमें से किसी के लिए नहीं

Ans : B

15. अलस शाला में आग लगने पर भी कितने लोग नहीं भागे ?

(A) तीन

(B) पौच

(C) चार

(D) छः

Ans : C

16. 'पुरुषपरीक्षा' किस रूप में विभिन्न मानवगुणों के महत्त्व का वर्णन करता है?

(A) पद्य रूप

(B) श्लोक रूप

(C) नाटक रूप

(D) कथा रूप

Ans : D

17. 'पुरुषपरीक्षा' किस भाषा में लिखित है ?

(A) संस्कृत

(B) हिन्दी

(C) मैथिली

(D) अवधी

Ans : A

18. घर में लगी आग को देखकर कौन लोग पलायमान हो गये ?

(A) आलसी लोग

(B) समझदार लोग

(C) फुर्तीले लोग

(D) धूर्त लोग

Ans : D

19. अरे कैसा हल्ला है ? किसने बोला ?

(A) पहला आलसी

(B) दूसरा आलसी

(C) मंत्री

(D) लेखक

Ans : A

20. 'पुरुषपरीक्षा' क्या शिक्षा देती है ?

(A) गुण निराकरण

(B) दर्शन

(C) दोष निराकरण

(D) सत्य

Ans : C

21. आलसियों को प्रतिदिन इच्छा अनुसार भोजन कौन दिलवाता था ?

(A) विद्यापति

(B) वीरेश्वर

(C) अलसशाला का कर्मचारी

(D) मिथिला का राजा

Ans : B

22.' तर्कयत यदस्मिन् गृहे अग्निर्लंग्नोऽस्ति ।' अलसकथा पाठ में यह किसकी उक्ति है ?

(A) पहले आलसी की

(B) तीसरे आलसी की

(C) दूसरे आलसी की

(D) चौथे आलसी की

Ans : C

23. सबसे बड़ा शत्रु कौन है ?

(A) क्षमा

(B) आलस्य

(C) क्रोध

(D) लोभ

Ans : B

24. वास्तविक आलसियों की संख्या कितनी थी ?

(A) 5

(B) 6

(C) 4

(D) 3

Ans : C

25. इस संसार में आलसियों का रक्षक (गति) कौन हैं?

(A) जननी

(B) कारुणिक

(C) पति

(D) धार्मिक

Ans : B

26. घर में आग लगने पर कौन नहीं भागा ?

(A) राजा

(B) सैनिक

(C) मंत्री

(D) आलसी

Ans : D

27. " कोई धार्मिक पुरुष नहीं है" ऐसा किस पुरुष ने कहा ?

(A) द्वितीय

(B) तृतीय

(C) प्रथम

(D) चतुर्थ

Ans : B

28. वीरेश्वर अनाथों को क्या देता था ?

(A) भोजन

(B) विद्या

(C) पैसा

(D) कलम

Ans : A

29. अरे वाचाल ! कितना बोलते हो ? किस पुरुष का कथन है ?

(A) चतुर्थ

(B) द्वितीय

(C) तृतीय

(D) प्रथम

Ans : A

30. विद्यापति कौन थे ?

(A) लेखक

(B) कवि

(C) राजा लोग

(D) मंत्री

Ans : B